विज्ञान, तकनीक और कौशल मातृभषा में पढ़ाए जाने पर मंथन

जगमार्ग ब्यूरो

चंडीगढ़। तकनीकी और कौशल शिक्षा की परिवर्तनकारी गतिशीलता पर मंगलवार को श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय और विज्ञान भारती के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन आयोजित किया गया। तकनीक, विज्ञान और कौशल जगत की विभूतियों ने इन विषयों को मातृभाषा में विकसित करने और पढ़ने पर रणनीति तय की। उद्घाटन सत्र के मुख्यातिथि एवं विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. शिव कुमार ने कहा कि कौशल विद्वता का प्रामणीकरण करता है। जिस भाषा में कौशल को समझने की सिद्धता है, उसी में उस कौशल को पढ़ाए जाने से मौलिकता आएगी। इसलिए हमें कौशल, तकनीक और विज्ञान को मातृभाषा में पढ़ना चाहिए। समापन सत्र के मुख्यातिथि एवं मुख्यमंत्री के ओएसडी डॉ. राज नेहरू ने कहा कि तकनीकी और कौशल शिक्षा देश व समाज के उत्थान में उपयोगी होनी चाहिए। हमारे पेटेंट सामाजिक और आर्थिकी को बदलने में सक्षम होने चाहिएं। यदि परिवर्तनकारी गतिशीलता हमारे व्यवहार में नहीं आएगी तो कौशल विकास संभव नहीं होगा। डॉ. राज नेहरू ने कहा कि देश की इकोनॉमी के विकास में इनोवेशन, स्टार्टअप और पेटेंट की बड़ी भूमिका है। इसमें विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों को अपना योगदान देना होगा।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर दिनेश कुमार ने कहा कि कौशल, तकनीक और विज्ञान को अपनी मातृभषा में पढ़एंगे तो और श्रेष्ठ परिणाम सामने आएंगे। जापान, जर्मनी, फ्रांस और रूस जैसे देश इसका बहुत बड़ा जीवंत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। कुलगुरु प्रोफसर दिनेश कुमार ने आह्वान किया कि सभी विषय विशेषज्ञ कौशल, तकनीक और विज्ञान की पाठ्य सामग्री अपनी मातृभाषा में विकसित करें, तभी यह अभियान सफल होगा। भविष्य में सेमी कंडक्टर कस फील्ड में बड़ी क्रांति आने वाली है। हम अपने युवाओं को उसके लिए तैयार करें। कुलगुरु प्रोफेसर दिनेश कुमार ने कहा कि जब हम सपने हिन्दी में देखते हैं तो उनको साकार करने के लिए अध्ययन भी हिंदी में आवश्यक है।